कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बच्चों के आपसी सम्बन्धों का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. अंशु भाटिया,
(रीडर)
जयपुर नेशनल विश्वविद्यालय, जयपुर
व
इन्दिरा चौधरी
(पीएच.डी. स्कॉलर)
जयपुर नेशनल विश्वविद्यालय, जयपुर

1.1 पस्तावना :

नारी के पास प्रकृति प्रदत्त कुछ ऐसे गुण होते हैं जो केवल नारी को ही प्राप्त हुए हैं। इनमें महत्त्वपूर्ण गुण है, सेवा भावना। नारी भिन्न–भिन्न रूपों से परिवार एवं समाज की सेवा करती है। एक माता के रूप में बच्चों की सेवा, पत्नी के रूप में पति की सेवा, बहू के रूप में परिवार के बड़े–बूढ़ों की सेवा और एक परिचारिका के रूप में वह समाज के दुःखी, अपंग और बीमारों की सेवा करती है। स्त्री के रूप में माँ का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

वर्तमान में नारी दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रही है। प्रथम वह माँ के रूप में बच्चों का पालन–पोषण करती है साथ ही साथ वर्तमान समय की आवश्यकताओं के लिए वह पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करती है।

एक तरफ हम कह सकते हैं कि बच्चे पूरी तरह से अपनी माँ पर निर्भर होते हैं, आज के युग में एक बड़ी संख्या में कार्यरत समूह महिलाओं का है। राष्ट्र की गरीबी का विश्लेषण करने और उनकी आर्थिक विकास की संभावनाओं का अध्ययन करने पर पता चलता है कि इस क्षेत्र में महिलाओं का योगदान बढ़ा है।

विगत वर्षों से यह देखने में आ रहा है, कि महिलाओं में शिक्षा के अधिक प्रसार के साथ–साथ उनमें विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने लगभग सभी प्रकार की नौकरियों में आने की प्रवत्ति तेजी से बढ़ती जा रही है।

दूसरी ओर कुछ ऐसे भी व्यक्ति और मनोवैज्ञानिक है, जिनका मानना है कि महिलाओं के कार्यरत रहने से उनके बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर नकारात्मक दिशा में प्रभाव पड़ता है। उनके विचार में कामकाजी महिलाऐं घर की तरफ अधिक ध्यान नहीं दे पाती हैं। क्योंकि अधिकतर समय घर से बाहर रहने के कारण उनको इतना समय नहीं मिलता है कि वे घर से सम्बन्धित उन सारी बातों को

सोचने का समय निकाल सकें जिनसे घर में अच्छा वातावरण बनता है। प्रारम्भ में तो आर्थिक उपलब्धि के कारण उनमें एक जोश होता है। किन्तु धीरे–धीरे उनके इस जोश मे परिवर्तन आ जाता है। आर्थिक लाभ के लालच में वे नौकरियाँ छोड़ भी नहीं सकती, दूसरी ओर सुबह सवेरे उठ कर नौकरी पर निकल जाना, शाम को थके–माँदे घर लौटना यह सब उनको इतना अवसर नहीं देता है कि अपने बालकों की शैक्षिक उपलब्धि की ओर ध्यान दे सकें। कार्य की थकान और समय के अभाव के कारण तथा व्यवसाय, कार्य सम्बन्धी जिम्मेदारी के कारण भी शैक्षिक उपलब्धियाँ प्रभावित होती हैं जिसके कारण उनका स्वभाव अधिक चिड़–चिड़ा हो जाता है जो कि धीरे–धीरे घर के समायोजन सम्बन्धित प्रक्रियाओं पर प्रभाव डालता है क्योंकि पुरूष अधिकतर बाहर कार्यरत रहने के कारण घर के कार्यों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं, इसलिये बच्चे प्रायः उपेक्षित होते हैं।

1.2 अध्ययन का औचित्य :

बालक के विकास में माता के स्नेह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जन्म से ही माँ के भविष्य में उसे एक सुरक्षा का बोध होता है। माँ के साथ रहकर बच्चे जहाँ शारीरिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति करने में समर्थ रहते हैं, वहाँ साथ ही साथ माँ का उचित निर्देशन व प्रशिक्षण उनके विकास को सही दिशा प्रदान करता है। इसके लिए आवश्यक है कि माताएँ अधिक से अधिक समय बच्चों के सम्पर्क में व्यतीत करें। जो स्त्रियाँ नौकरी करने लगती हैं, उसका दिन का अधिकांश समय घर के बाहर स्कूलों, दफ्तरों आदि में बीतता है। लेकिन ऐसी माताओं का मानना है कि बच्चे को अकेले छोड़ने से बहुत कुछ काम वह स्वयं करना सीखता है, और आत्मनिर्भर होता है।

नौकरी करने वाली महिला जबरदस्त द्वन्द से गुजरती है, घर और बाहर दुगुना काम करती है। ऐसी स्थिति में कामकाजी महिला का अपने किशोर बच्चों के साथ कैसा सम्बन्ध है वह किशोर बच्चों की तरफ ध्यान दे पाती है। इसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कैसा पड़ता है यह एक खोज का विषय है इस नये खोज की गति व उद्देश्य दोनों इस विषय के गहन अध्ययन के लिए बाध्य करते हैं।

1.3 अध्ययन का शीर्षक :

कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बच्चों के आपसी सम्बन्धों का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य :

- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्र/छात्राओं के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करना।

- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्र/छात्राओं के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत किशोर छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

1.5 परिकल्पनाऐं :

- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.6 प्रतिदर्श :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए जयपुर जिले के सरकारी माध्यमिक और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा प्प के 200 विद्यार्थियों को लिया गया है। प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन के आधार पर किया गया है।

1.7 उपकरण :

आपसी सम्बन्धों के अध्ययन हेतु डॉ. नलिनि राव द्वारा निर्मित पेरेन्ट चाइल्ड रिलेशनशिप टेस्ट का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के कक्षा IX के प्राप्तांकों को लिया गया।

1.8 प्रदत्त विश्लेषण :

संग्रहीत प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु सारणीबद्ध करने मध्यमान प्रमाप विचलन, 'टी' अनुपात आदि द्वारा के मध्य सह–सम्बन्ध की गणना की गयी।

आरेख संख्या 4.2.1 :

1 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के आपसी सम्बन्धों में सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 4.2.2 :

2 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 4.2.3 :

3 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत छात्रों के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है यह उचित व सही है तथा स्वीकृत की जाती है।

आरेख संख्या 4.2.4 :

4 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 4.2.5 :

5 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 4.2.6 :

6 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरख संख्या 4.2.7 :

7 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के आपसी सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान कामकाजी महिलाओं से अधिक है, अतः गैर कामकाजी महिलाओं की पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के माँ–बालिका सम्बन्ध अधिक अच्छे हैं।

आरेख संख्या 4.2.8 :

8 : कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षत :

गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान कामकाजी महिलाओं से अधिक है, अतः गैर कामकाजी महिलाओं की पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी है।

1.9 निष्कर्ष एवं सुझाव :

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक सरकारी विद्यालयों व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और आपसी सम्बन्धों में सार्थक सह–सम्बन्ध होता है।

अध्ययन के परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं की गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के आपसी सम्बन्धों में सार्थक अन्तर नहीं है। अस्वीकृत होने के कारण तथा इसमें कामकाजी महिलाओं से गैर कामकाजी महिलाओं की गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के माँ–बालिका सम्बन्ध अधिक अच्छे हैं।

विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में विद्यालय का वातावरण व घर का वातावरण के साथ उपयुक्त समायोजन करते हुए उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करें। इसके द्वारा शिक्षा में 'अवरोधन' की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. बुच., एम.बी. (1988–92), 'फिफ्थ सर्वे ऑफ रिचर्स इन एजुकेशन', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
2. अग्रवाल, कुसुम (1999), 'ए स्टडी ऑफ पेरेन्टल एटीट्यूड्स एण्ड सोशियो–इकॉनामिक बैकग्राउंड ऑफ द एजुकेशनली फेल्ड एडोलसेंटफस', इंडियन जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, वाल्यूम–18(1), 17–22
3. त्रिपाठी, कुमुद (2004), 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव : एक अध्ययन', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 23, अंक 1, जनवरी–जून 2004।
4. श्री, विद्या प्रतिभा सी.एस. (2006), 'रोल ऑफ पेरेन्ट्स इन हेल्पिंग एडोलसेंट्स विद स्ट्रेस', एक्सपैरिमेन्ट इन एजुकेशन, वाल्यूम ग्ग्प्ट, नं. 8, पेज 165
5. पंवार, एस. एवं उनियाल एन.पी. (2008), 'उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन एवं माता–पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन', प्राथमिक शिक्षक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, वर्ष 33, अंक 1, जनवरी 2008
6. नागराज, जे, 'पेरेन्टल एटीट्यूट्स एण्ड चाइल्ड डवलपमेन्ट', अनपुट रिसर्च पेपर, 1977
7. सक्सैना, वन्दना, 'ए स्टडी ऑफ दा इम्पेक्ट ऑफ फेमिली रिलेशनशिप ऑन एडजेस्टमेन्ट, एनजाइटी, एचीवमेन्ट, मोटीवेशन, सेल्फ कान्सेप्ट, एकेडेमिक, अकेडेमिक एचीवमेन्ट ऑफ हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स', पी.एच.डी. एजुकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी, 1988
8. सिअर्स आर.आर. एण्ड अथर्स, 'पेटर्नस ऑफ चाइल्ड रिअसिंग', न्यूयॉर्क वेली 1971